भुरभुसी गोलीबारी में शहीद हुईं कामरेड्स सुमित्रा और सनोति को लाल-लाल सलाम!

19 जनवरी 2013 को पीएलजीए का मेंढ़की स्थानीय सांगठनिक दस्ता (एलओएस) अपने रूटीन कामकाज के तहत भुरभुसी गांव गया था। यह गांव कांकेर जिले के पखांजूर तहसील, कोइलीबेड़ा विकासखण्ड में स्थित है। क्रांतिकारी आंदोलन के हिसाब से यह गांव उत्तर बस्तर क्षेत्र के परतापुर एरिया के तहत आता है। दस्ते के साथी एक मकई के खेत में रुके हुए थे। वो जनता के साथ बातचीत करने के बाद सुबह का खाना खाकर आराम कर रहे थे। कुछ महिला साथी पास में मौजूद एक नाले में नहा रही थी। अपने मुखबिर के जरिए इस दस्ते के लोकेशन की ठोस सूचना पाकर बीएसएफ (सीमा सुरक्षा बल) और जिला पुलिस के सौ से ज्यादा जवानों ने 11.30 बजे तीन तरफ से दस्ते को घेर लिया और अंधाधुंध गोलीबारी शुरू कर दी। एक साथ दस्ते के मुकाम और नहाने की जगह दोनों जगहों पर हमला शुरू कर दिया। दस्ता सदस्य इस हमले का प्रतिरोध करते हुए सुरक्षित निकल गए जबकि स्नान करने वाली तीन महिला साथियों में से दो – कामरेड्स सुमित्रा और सनोति सरकारी सशस्त्र बलों की एकतरफा गोलीबारी में शहीद हो गईं एक और साथी किसी तरह भागकर अपनी जान बचाने में सफल हो गई। आइए, भारत की नई जनवादी क्रांति के महान लक्ष्य को पूरा करने के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाली इन वीरांगनाओं को सिर झुकाकर श्रद्धांजलि दें और उनके अधूरे कार्यभारों को पूरा करने की शपथ लें।

कामरेड सुमित्रा (कुरसम मासे)

कामरेड सुमित्रा (24) का जन्म पश्चिम बस्तर डिवीजन (बीजापुर जिला) के गंगालूर इलाके के गांव ईसुलनार में आदिवासी कोया समाज के कुरसम परिवार हुआ था। मां जिम्मो और पिता .... की छह संतानों में वह तीसरी थीं। माता–पिता ने उनका नाम मासे रखा था। यह गांव क्रांतिकारी संघर्ष के मजबूत केन्द्रों में से एक है। 2005 में जब सलवा जुडुम शुरू हुआ था, तब ईसुलनार भी उसकी बर्बरता का शिकार हुआ था। इस गांव में जुडुम के गुण्डों और सरकारी सशस्त्र बलों ने कई घरों में आग लगा दी। खुद मासे के पिता को भी जुडुमी गुण्डों ने बुरी तरह मारा–पीटा था जिससे कुछ दिन बाद उनकी मृत्यु हो गई। इस नेपथ्य में कामरेड मासे ने सहज ही तय कर लिया कि इस शोषणकारी व दमनकारी व्यवस्था को बदलना है तो उस जैसे सैकड़ों–हजारों लोगों को क्रांतिकारी आंदोलन में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनकर काम करना ही होगा। इस तरह वह फरवरी 2006 में पूर्णकालीन कार्यकर्ता बनकर पीएलजीए में शामिल हो गईं। उसके पहले वह सीएनएम में रहकर अपने नाच–गानों से जनता को प्रभावित करती थीं। कुछ समय के लिए उन्होंने मिलिशिया प्लाटून में सदस्य बनकर भी काम किया था। इस गांव के कई युवक व युवतियां जन संगठनों, मिलिशिया और पार्टी के पूर्णकालीन कार्यकर्ताओं के रूप में काम कर रहे हैं। भर्ती होते ही कामरेड मासे को वहां की पार्टी कमेटी ने उत्तर बस्तर क्षेत्र में भेज दिया। वह बिना किसी हिचाकिचाहट के पार्टी के फैसले को मान गईं। अपना नाम 'सुमित्रा' बदलकर उन्होंने परतापुर एरिया में काम करना शुरू किया। पहले उन्होंने इस इलाके में कार्यरत एलजीएस में सदस्य के रूप में काम किया था। जुलाई 2007 में उन्हें पार्टी सदस्यता दी गई। 2008 में उन्हें प्लाटून–25 में स्थानांतरित किया गया था। 2010 में फिर उन्हें परतापुर इलाके में भेजकर एलजीएस उप कमाण्डर की जिम्मेदारी दी गई। उसी समय उन्होंने अपनी पसंद के एक कामरेड से शादी कर ली।

कामरेड सुमित्रा (मासे)

कामरेड सुमित्रा ने उत्तर बस्तर क्षेत्र में जनता को उसकी समस्याओं पर गोलबंद करने में अपने हिस्से की भूमिका निभाई। दस्ता किसी भी गांव में जाता है तो वह महिलाओं से घुलमिल जाते हुए बातें करती थीं। बच्चों को क्रांतिकारी गीत सुनाया करती थीं और सिखाती भी थीं। महंगाई, अकाल, विस्थापन, सरकारी दमन, प्रशिक्षण के बहाने माड़ पर सेना के कब्जे की योजना आदि मुद्दों पर जनता के बीच किए गए राजनीतिक प्रचार और गोलबंदी में कामरेड सुमित्रा का योगदान रहा। इसके अलावा सरकारी सशस्त्र बलों पर किए गए कुछ हमलों में भी कामरेड सुमित्रा ने जोशोखरोश

के साथ भाग लिया। जनवरी 2009 में पाचंगी के पास तथा अगस्त 2010 में भुस्की के पास पीएलजीए द्वारा किए गए ऐम्बुशों में कामरेड सुमित्रा ने भाग लिया। उन्हें सफल बनाने में अपने हिस्से की जिम्मेदारी निभाई। इस तरह जनता और कैडरों का विश्वास व प्यार हासिल करते हुए उच्च जिम्मेदारियां निभाने योग्य बन चुकी कामरेड सुमित्रा की मौत से परतापुर इलाके के साथ–साथ उत्तर बस्तर आंदोलन को भी बड़ा नुकसान हुआ।

कामरेड सनोति (राजे नुरोटी)

कामरेड सनोति (21) का जन्म नारायणपुर जिले के ओरछा विकासखण्ड, कुमुडगुण्डा गांव में हुआ था। मां मूरी और पिता कोपा नुरोटी की तीन संतानों में वह आखिरी थीं। उनके दो भाई हैं। जब वह बहुत छोटी थी, तभी उनके पिता की मौत हुई थी। मां–बाप ने उनका नाम 'राजे' रखा था लेकिन गांव के सभी लोग उन्हें 'मिड़को' के नाम से बुलाते थे। कुमुडगुण्डा बाहरी दुनिया के लिए 'अबूझमाड़' माने जाने वाले माड़ क्षेत्र का एक छोटा सा गांव है। इस गांव में जनताना सरकार द्वारा एक आश्रमशाला चलाई जाती थी जिस पर अक्टूबर 2008 में पुलिस ने हमला कर दिया था। उसके बाद उसे वहां हटा दिया गया। जनता की इस आश्रमशाला में पढ़ने वाले बच्चों के लिए कामरेड सनोति खाना बनाने में मदद करती थीं और साथ ही, खुद भी पढ़ना–लिखना सीख लेती थीं। वह सीएनएम की सदस्य बनी थीं और पंचायत कमेटी की सदस्य भी चुन ली गई थीं। क्रांतिकारी गीतों को वह बेहद सुरीले ढंग से गाती थीं और नाच में भी वह एक अच्छी कलाकार थीं। 2011 में वह पूर्णकालीन कार्यकर्ता बन गईं। घर पर रहते हुए काम करते समय ही उन्हें पार्टी सदस्यता देने का निर्णय हो चुका था। 2011 में उन्हें परतापुर एरिया में मेंढ़की एलओएस में सदस्य के रूप में भेजा गया। दस्ते में उन्हें सीएनएम की विशेष जिम्मेदारी दी गई थी।

कामरेड सनोति (राजे)

कामरेड सनोति ने अपने गीतों और कला के माध्यम से जनता को रावघाट, चारगांव खदानों के खिलाफ लड़ने का संदेश दिया। सरकारी दमन और सेना की तैनाती की योजनाओं का विरोध करने का आह्वान किया। कामरेड सनोति के अंदर जन कला और संस्कृति की जबर्दस्त समझ थी। वह जहां भी जाती थीं तो अपने इन गुणों से लोगों को उत्साहित करती थीं और और सभी को क्रांतिकारी राजनीति की ओर आकर्षित करती थीं। उनके गीतों और सांस्कृतिक प्रदर्शनों को देखने के लिए लोग खूब आते थे। हर प्रोग्राम में उनके गीतों की मांग बहुत होती थी। वह सभी की चहेती थीं। जनता में काफी लोकप्रिय होने के बावजूद उनके अंदर घमण्ड कभी नहीं देखा गया। वह जनता और साथियों के साथ विनम्रतापूर्वक बरताव करती थीं।

दुश्मन के हमले में इन दोनों नव युवतियों की मौत के बाद परतापुर क्षेत्र के तमाम लोगों ने, खासकर महिलाओं ने आंसू बहाए और बेहद रोष व्यक्त किया। कई जगहों पर इन दोनों की याद में सभाएं हुईं जहां जनता और क्रांतिकारियों ने श्रद्धांजलि पेश की। कामरेड्स सुमित्रा और सनोति की शहादत व्यर्थ नहीं जाएगी। उनकी दिखाई राह में हजारों, लाखों नौजवान चल पड़ेंगे। सामंतवाद, दलाल नौकरशाह पूंजीवाद और सम्राज्यवाद को दफनाकर नए जनवादी भारत का निर्माण करेंगे। आइए.... जनयुद्ध को तेज कर कामरेड्स सुमित्रा और सनोति की मौत का बदला लेने की शपथ लें।

कामरेड्स सुमित्रा और सनोति के आदर्शों को ऊंचा उठाओ!

जल-जंगल-जमीन पर अधिकार जनता का है!

रावघाट-चारगांव खदानों और रेललाइन योजना को बंद करो!

बस्तर से तमाम पुलिस व अर्द्ध सैनिक बलों को वापस लो! सेना का प्रशिक्षण बंद करो!

भारत की नव जनवादी क्रांति जिंदाबाद!

भारत की कम्युनिस्ट पार्टी (माओवादी)

माड़–उत्तर बस्तर संयुक्त डिवीजनल कमेटी